

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 16: चित्रकेतु भगवद्-प्राप्ति

3 October 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



शोक से पवित्र और ज्ञान से परिपक्व होकर, राजा चित्रकेतु अन्ततः भगवान् संकर्षण का दर्शन करते हैं — कमल-तन्तु के समान श्वेत, नीलाम्बर धारण किए, सिद्ध ऋषियों से घिरे — और उस एक दर्शन से अपने पाप विलीन होते देख, वे अपना हृदय प्रेमपूर्ण स्तुति में उँडेल देते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। षष्ठ स्कन्ध का सोलहवाँ अध्याय चित्रकेतु की कथा को उसके देदीप्यमान शिखर तक ले आता है। स्वयं दिवंगत राजकुमार अपने शोकाकुल परिवार को भ्रम से मुक्त करने बोलता है; राजा, अब विरक्त, पवित्र प्रार्थना का जप करके भगवान् संकर्षण का साक्षात् दर्शन करता है; और भगवान्, उसकी

स्तुति से प्रसन्न होकर, उसे परम तथा आत्मा की एकता, और उस भक्ति की शिक्षा देते हैं जो पूर्णता तक ले जाती है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 16 (षोडश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: राजा चित्रकेतु को भगवद्-प्राप्ति
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए; कथा के भीतर दिवंगत आत्मा, चित्रकेतु तथा भगवान्
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; बाह्य कथा में नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: चित्रकेतु का राजमहल, यमुना का तट, तथा भगवान् संकर्षण का धाम
- केन्द्रीय विषय: दिवंगत आत्मा का उपदेश, चित्रकेतु का भगवद्-दर्शन, और भगवान् का एकता तथा भक्ति पर उपदेश
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 16, श्लोक 1-65
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

दिवंगत आत्मा बोलती है

अपने योगबल से, नारद ने मृत राजकुमार की आत्मा को बुलाया और उससे कहा कि वह अपने शरीर में लौट आए और राजसी वैभव तथा अपने शोकाकुल स्वजनों का प्रेम भोगे। किन्तु आत्मा ने ऐसी विद्या से उत्तर दिया जिसने उनके शोक को मौन कर दिया। मेरे अनेक जन्मों में से किस में ये लोग मेरे माता-पिता थे, उसने पूछा? जन्म-पुनर्जन्म के इस लम्बे फेर में सभी जीव क्रमशः एक-दूसरे के स्वजन और पराए, मित्र और बैरी बनते रहते हैं (श्लोक 1-5)।

बन्धुजात्यरिमध्यस्थमित्रोदासीनविद्विषः ।

सर्व एव हि सर्वेषां भवन्ति क्रमशो मिथः ॥ ५ ॥

bandhu-jñāty-ari-madhyastha- mitrodāsina-vidviṣaḥ sarva eva hi sarveṣāṁ bhavanti kramaśo mithaḥ

अर्थ: पुनर्जन्म के दीर्घ क्रम में, सब प्राणी बारी-बारी से एक-दूसरे के बन्धु तथा सम्बन्धी, शत्रु तथा मध्यस्थ, मित्र तथा उदासीन बन जाते हैं। (स्कन्ध 6, अध्याय 16, श्लोक 5)

जैसे स्वर्ण मनुष्यों के बीच एक हाथ से दूसरे हाथ जाता है, आत्मा ने कहा, वैसे ही देहधारी स्व विभिन्न गर्भों से होकर जाता है; “मेरेपन” का भाव केवल तब तक रहता है जब तक सम्बन्ध स्वयं रहता है। भीतर की आत्मा शाश्वत है, स्वयं-प्रकाशमान, एकमात्र साक्षी, पुण्य और पाप से अछूती। यह कहकर आत्मा अन्तर्धान हो गई — और विस्मित स्वजनों ने अपने शोक के बन्धन काट दिए और विलाप त्याग दिया (श्लोक 6-12)।



नारद द्वारा बुलाई गई दिवंगत राजकुमार की आत्मा सिखाती है कि प्राणी अनेक जन्मों में बारी-बारी से स्वजन और पराए बनते हैं, और फिर अन्तर्धान हो जाती है (श्लोक 1-12)।

राजा तैयार होता है

अन्त्येष्टि के पश्चात्, जिन रानियों ने शिशु को विष दिया था, ऋषि की चेतावनी स्मरण कर, लज्जा से भर गई और यमुना के तट पर प्रायश्चित्त किया। स्वयं चित्रकेतु, ऋषियों के वचनों से आत्मा का बोध पाकर, सांसारिक अस्तित्व के छलपूर्ण कूप से वैसे ऊपर उठे जैसे हाथी कीचड़ से निकलता है। उन्होंने यमुना में स्नान किया, ब्रह्मा के दोनों पुत्रों को प्रणाम किया, और नारद से पवित्र प्रार्थना ग्रहण की। नारद और अंगिरा तब ब्रह्मलोक को चले गए, जबकि राजा केवल जल पर निर्वाह करते हुए सात रात्रियों तक पूर्ण एकाग्रता से उस प्रार्थना का जप करते रहे। उस अवधि के अन्त में उन्होंने विद्याधरों का आधिपत्य प्राप्त किया, और शीघ्र ही, उनका मन पूर्णतः प्रकाशित होने पर, वे भगवान् शेष के चरणों में पहुँचे (श्लोक 13-29)।



अन्ततः विरक्त होकर, चित्रकेतु यमुना में स्नान करते हैं और सात रात्रियों तक पूर्ण एकाग्रता से पवित्र प्रार्थना का जप करते हैं (श्लोक 13-29)।

भगवान् का दर्शन

वहाँ चित्रकेतु ने भगवान् का दर्शन किया — उनका रूप कमल के तन्तु के समान श्वेत, नीलाम्बर धारण किए, देदीप्यमान मुकुट, बाजूबन्द और कंगन से विभूषित, मुख प्रसन्न और नेत्र अरुण, सिद्ध ऋषियों के मण्डलों से घिरे। उस एक दर्शन से उनके समस्त पाप धुल गए, हृदय प्रत्येक मालिन्य से स्वच्छ हो गया, और राजा गहन भक्ति से, प्रेम के अश्रु बहाते और रोमांचित होकर, निकट आए और उन्हें प्रणाम किया। बहुत देर तक प्रेम ने उनका स्वर इतना रूँध दिया कि वे बोल न सके; फिर, अपना मन संयत कर, उन्होंने विश्वगुरु की स्तुति की (श्लोक 30-33)।



भगवान् के दर्शन से पाप विलीन होते हुए, चित्रकेतु प्रेम के अश्रु सहित प्रणाम करते हैं और अपना हृदय स्तुति में उँडेल देते हैं (श्लोक 30-48)।

चित्रकेतु ने भगवान् की स्तुति उस अजेय के रूप में की जो फिर भी अपने भक्तों के प्रेमपूर्ण हृदयों से जीत लिए जाते हैं; जिनके लिए विश्व की सृष्टि, पालन और संहार मात्र लीला है; जिनके भीतर यह अण्डाकार ब्रह्माण्ड असंख्य अन्यो के बीच एक अणु के समान तैरता है। उन्होंने उन लोगों पर खेद प्रकट किया जो, विषय-सुख के प्यासे, छोटे देवताओं को पूजते हैं किन्तु परम को नहीं, जिनके वरदान उनके दाताओं के साथ ही नष्ट हो जाते हैं। सबसे कोमल था भगवान् की कृपा की शक्ति पर उनका विस्मय (श्लोक 34-43)।

न हि भगवन्नघटितमिदं

त्वद्दर्शनान्प्रणामखिलपापक्षयः ।

यन्नाम सकृच्छ्रवणात्

पुक्कशोऽपि विमुच्यते संसारात् ॥ ४४ ॥

na hi bhagavann aghaṭitam idaṁ tvad-darśanān nṛṇāṁ akhila-pāpa-kṣayaḥ yan-nāma sakṛc chravaṇāt pukkaśo 'pi vimucyate saṁsārāt

अर्थ: हे भगवन्, यह कोई आश्चर्य नहीं कि आपका दर्शन मनुष्यों के समस्त पापों को नष्ट कर देता है, जबकि एक चाण्डाल भी आपका नाम केवल एक बार सुनने से ही जन्म-मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाता है। (स्कन्ध 6, अध्याय 16, श्लोक 44)

उन्होंने स्वीकार किया कि वे जो कुछ कह सकते थे उसमें से कुछ भी सर्वात्मा भगवान् के लिए नवीन नहीं, जिनके सम्मुख स्तुति करने वाला सूर्य के सम्मुख जुगनु के समान है, और उन्होंने सहस्रशीर्ष भगवान् को पुनः प्रणाम किया (श्लोक 45-48)।

भगवान् का उपदेश

उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर, भगवान् अनन्त ने चित्रकेतु से कहा। तुमने नारद और अंगिरा के उपदेश से तथा मेरे दर्शन से अपना लक्ष्य पूर्णतः प्राप्त कर लिया है, उन्होंने कहा। फिर उन्होंने परम ज्ञान प्रकट किया: कि वे स्वयं समस्त प्राणी हैं, उनकी अन्तरात्मा और उनका उद्गम (श्लोक 49-51)।

अहं वै सर्वभूतानि भूतात्मा भूतभावनः ।

शब्दब्रह्म परं ब्रह्म ममोभे शाश्वती तनू ॥ ५१ ॥

aham vai sarva-bhūtāni bhūtātmā bhūta-bhāvanaḥ śabda-brahma param brahma mamobhe śāśvatī tanū

अर्थ: मैं समस्त प्राणी हूँ, उनकी अन्तरात्मा तथा उद्गम; वेद की ध्वनि तथा दिव्य परब्रह्म दोनों मेरे शाश्वत शरीर हैं। (स्कन्ध 6, अध्याय 16, श्लोक 51)



प्रसन्न होकर, भगवान् प्रकट करते हैं कि वे समस्त प्राणियों की आत्मा तथा स्रोत हैं और चित्रकेतु को आत्मा-ईश्वर की एकता सिखाते हैं (श्लोक 49-65)।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने स्व को समूचे ब्रह्माण्ड में व्याप्त और ब्रह्माण्ड को अपने स्व में स्थित जाने, दोनों को भगवान् से व्याप्त, भगवान् ने सिखाया। जैसे स्वप्न देखने वाला अपने भीतर एक जगत् देखता है और जागकर पाता है कि वह मन की ही लीला थी, वैसे ही मनुष्य को मन की समस्त अवस्थाओं को माया का उत्पाद जानकर अपना मन परम पर स्थिर करना चाहिए। जो मनुष्य-योनि में जन्म पाकर भी अपने यथार्थ स्वरूप का बोध नहीं करता, उसे कहीं शान्ति नहीं मिलती; किन्तु जो भगवान् की भक्ति करता है, तीन अवस्थाओं से परे सूक्ष्म आत्मा को

देखकर, वह उस एक वस्तु को प्राप्त करता है जो सचमुच जानने योग्य है — परम तथा जीव की एकता। इस उपदेश को श्रद्धापूर्वक मन में धारण करके, भगवान् ने चित्रकेतु को आश्चस्त किया, वह शीघ्र ही पूर्णता प्राप्त करेगा। फिर, राजा के देखते-देखते, भगवान् श्रीहरि अन्तर्धान हो गए (श्लोक 52-65)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. पारिवारिक सम्बन्ध क्षणिक भूमिकाएँ हैं, आत्मा का सत्य नहीं। दिवंगत राजकुमार दिखाता है कि प्राणी अनेक जन्मों में बारी-बारी से स्वजन और पराए बनते हैं, और सम्बन्ध का “मेरापन” केवल तब तक रहता है जब तक सम्बन्ध रहता है (श्लोक 5-8)।
2. आत्मा अमर साक्षी है। वह स्वयं-प्रकाशमान है, पुण्य और पाप से अछूती, जो कुछ बीतता है उसकी एकमात्र द्रष्टा (श्लोक 9-11)।
3. भगवान् का दर्शन तथा नाम समस्त पाप नष्ट कर देते हैं। चित्रकेतु विस्मित होते हैं कि एक चाण्डाल भी भगवान् का नाम एक बार सुनने से मुक्त हो जाता है, और उनके अपने पाप भगवान् के दर्शन से विलीन हो जाते हैं (श्लोक 44)।
4. भगवान् समस्त प्राणियों की आत्मा तथा स्रोत हैं। वे प्रकट करते हैं कि वे स्वयं प्रत्येक प्राणी हैं, उनकी अन्तरात्मा और उद्गम, और वेद तथा ब्रह्म उनके शाश्वत रूप हैं (श्लोक 51)।
5. लक्ष्य है एकता पर आधारित भक्ति। भगवान् सिखाते हैं कि परम तथा जीव की एकता का बोध, और उनकी भक्ति, ही सचमुच प्राप्त करने योग्य एकमात्र लक्ष्य है (श्लोक 61-64)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

चित्रकेतु को उनके शोक से अन्ततः जो उठाता है वह कोई सान्त्वना-वचन नहीं, अपितु दृष्टि का परिवर्तन है। जिस बालक का उन्होंने शोक किया था, वही लौटकर उन्हें, कोमलता से और बिना उलाहने के, बताता है कि पिता और पुत्र का बन्धन एक ऐसे नाटक के एक ही दृश्य के लिए पहना गया वेश है जो अनगिनत जन्मों से चल रहा है — कि प्रेम सच्चा है, किन्तु भूमिकाएँ स्थायी नहीं, और उनके नीचे की आत्मा कभी वस्तुतः उनकी खोने को थी ही नहीं। इससे मुक्त होकर, राजा रूखे नहीं होते; वे स्पष्ट होते हैं। वे स्नान करते हैं, प्रार्थना करते हैं, और स्वयं भगवान् का दर्शन करते हैं, और उस दर्शन में उनके हृदय का प्रत्येक कलंक घुल जाता है। सबसे सुन्दर वह है जो भगवान् फिर उन्हें बताते हैं: केवल यह नहीं कि आत्मा शाश्वत है, अपितु यह कि भगवान् ही प्रत्येक प्राणी की अन्तरात्मा हैं, जिससे जिससे भी हम प्रेम करते हैं वह उनसे कभी वस्तुतः अलग नहीं। एक रिक्त पालने से आरम्भ हुआ शोक ईश्वर के भीतर समूचे ब्रह्माण्ड के आलिंगन में समाप्त होता है। यही भागवत का प्रत्येक शोकग्रस्त से वचन है: कि जिस एक को हम अपने बिखरे प्रेमों में खोजते हैं वह उन सबसे निकट है, और हानि से होकर जाने वाला मार्ग, भक्ति के साथ चला गया, सीधे उनके चरणों तक ले जाता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, किसी एक सम्बन्ध या भूमिका पर अपनी पकड़ कोमलता से ढीली कीजिए जिसे आप ऐसे थामे हैं मानो वह आपको परिभाषित करती हो, और स्मरण कीजिए कि आपके भीतर तथा जिनसे आप प्रेम करते हैं उन सबके भीतर की आत्मा सदा भगवान् की है। कुछ क्षण किसी पावन नाम या छोटी प्रार्थना को पूर्ण ध्यान से दोहराइए, जैसे चित्रकेतु ने अपनी दोहराई, और भगवान् से प्रार्थना कीजिए कि वे आपको सबकी अन्तरात्मा के रूप में उनका दर्शन करा दें। दिनभर यह शान्त ज्ञान साथ ले चलिए कि आपका कोई भी सच्चा प्रिय उनसे कभी अलग नहीं।

उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का सोलहवाँ अध्याय चित्रकेतु की कथा को शोक से महिमा तक उठा देता है। दिवंगत राजकुमार अपने परिवार को भ्रम से मुक्त करता है, यह सिखाते हुए कि समस्त सम्बन्ध क्षणिक भूमिकाएँ हैं और आत्मा ही टिकती है; राजा तब जाग्रत होकर भगवान् संकर्षण का साक्षात् दर्शन पाता है, और उसका प्रत्येक पाप उस एक दर्शन में विलीन हो जाता है। भगवान् तब स्वयं को समस्त प्राणियों की आत्मा तथा स्रोत के रूप में प्रकट करते हैं और राजा को एकता पर आधारित भक्ति की ओर मोड़ देते हैं। जैसे-जैसे यह स्कन्ध अगले अध्याय में चित्रकेतु की भगवान् शिव तथा देवी पार्वती से भेंट की ओर बढ़ता है, हम इस अध्याय का उज्ज्वल आश्वासन साथ ले चलते हैं: कि जिस एक को हम प्रत्येक प्रेम के भीतर खोजते हैं वह उन सबसे निकट है, और शोक से होकर जाने वाला मार्ग, भक्ति के साथ, उनके पास ले जाता है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ तथा साभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, षोडश प्रवचन।
- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-6-chapter-16-citraketu-attains-the-lord-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़डम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट